National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 3; September 2017; Page No. 617-619

रामकाव्य में नारी विमर्श

डॉ0 मंजु सांगवान
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, महिला महाविद्यालय, झोझू कलां, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का चरित्र भारतीय संस्कृति के समष्टि रूप का पर्याय बन चुका है। सारी सृष्टि में रमे राम युग – युग से सात्विक रसिकजनों की रस साधना व अध्यात्म – प्रिय जनता की आस्था का केन्द्र बने श्री राम का चरित्र इतना लोकप्रिय रहा है कि भारत की विभिन्न प्रांतीय
भाषाओं में ही नहीं, विश्व वाड्मय का भी अभिन्न अंग बना और रामकथा को लेकर विशाल साहित्य का निर्माण हुआ है। काल प्रवाह के साथ कवियों की व्यक्तिगत रूचि और युगयुगीन सांस्कृतिक आदर्शों के अनुरूप रामकथा नूतन साँचों में ढलती रही। वे महापुरूष, महात्मा, धीरोदात्त नायक से अवतारी बन गए। हिन्दुओं ने यदि उन्हें विष्णु के दशावतारों में प्रतिष्ठित किया, जो जैनों ने त्रिषष्टि में आठवें बलदेव व बोद्धों ने बोधिसतव के रूप में पूजा की। श्री राम शनैः शनैः साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों के नायक बन गए। निर्गुण व सगुण दोनों के प्रवर्तकों ने उनकी महिमा के गीत गाए। कबीर ने श्री राम को निर्गुण ब्रह्मा के रूप में स्वीकर करते हुए उनके नाम को शक्तों के लिए सर्वस्व माना और कहाः–

दशरथ सुत तिहुँ लोक बरवाना। राम नाम का मरम है आना।।

तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में उनके नाम के साथ, कल्पतरू और मुक्ति का धाम बताया। यथा नामु राम को कल्पतरू, कलि कल्यान निवासु।
इसी प्रकार साकेतकार ने कहा–

राम तुम्हारा वृत स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।।

हरिऔध ने वैदेही वनवास में उनकी प्रिया जानकी की करूण गाथा गायी, तो सांकेत संत के कवि ने उनके उदात्त चरित्र, तपस्वी व महाबलिदानी भाई भरत की गौरव गाथा प्रणीत की। वर्तमान भारतीय जनमानस में रामकथा उनकी जीवन पद्धति का आश्रय है। उसकी प्रमाणिकता उनकी आस्था, चेतना व भक्ति में परिलक्षित होती है। वस्तुतः रामकथा भारतीय पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक, अध्यात्मिक व लौकिक आदर्श का प्रतिबिम्ब बन चुकी है, उसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है।
रामकथा भारत की आदि कथा है, जिसे भारतीय संस्कृति का रूपक कह दिया जाये तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। रामकथा के सभी पात्र भारतीय संस्कृतिक मूल्यों को महिमा प्रदान करते दिखाई देते हैं। विशेष रूप से नारी पात्र अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं। उनमें भारतीय मूल्यों के प्रति असीम आस्था है, त्याग की प्रतिमूर्तियाँ हैं, आदर्श पतिव्रता है, विवेकवान् समर्पणशीला है, कर्तव्यपरायण व युग धर्म की रक्षिका भी है। समय आने पर अपनी श्रेष्ठता भी सिद्ध करती है। सम्पूर्ण कथानक को आदर्श मंडित करने नारी पात्रों की विशेष भूमिका रही है। रामकथा में वर्णित पात्र हैः सीता, कौशल्या, कैकयी, उर्मिला, मन्दोदरी, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति, सुमित्रा, मंथरा, शूर्पणखा, शबरी आदि। ये नारी पात्र इतने भव्य रूप में चित्रित हुए हैं कि पुरूष भी उनके पथ का अनुसरण करते हैं।

''नारी के जिस भव्य भाव का, स्वाभिमान भाषी हूँ मैं।
उसे नरों में भी पाने का, उत्सुक अभिलाषी हूँ मैं।।''

पंचवटी

सीता रामकाव्य परम्परा के अंतर्गत सीता भारतीय नारी – भावना का चरमोत्कृष्ट निदर्शन है, जहाँ नाना पुराण निगमागमों में व्यक्त नारी आदर्श सप्राण एवं जीवन्त हो उठे हैं। नारी पात्रों में सीता ही सर्वाधिक विनयशीला, लज्जाशीला, संयमशीला, सहिष्णु और पतिव्रत की दीप्ति से दैदीप्यमान नारी है। समूचा रामकाव्य उसके तप, त्याग एवं बलिदान के मंगल कुंकुम से जगमगा उठा है। लंका में सीता को पहचानकर उनके व्यक्तित्त्व की प्रशंसा करते हुए हनुमान जी ने कहाः

''दुष्कंर कृतवान् रामो हीनो यदनया प्रभुः
धारस्यत्यात्मनो देंह न शोकेनावसीदति।
यदि नामः समुन्द्रान्ता मेदिनी परिवर्तयेत्
अस्थाःकृते जगच्चापि युक्त मिल्येव मे मतिः।।''

अर्थात ऐसी सीता के बिना जीवित रहकर राम ने सचमुच बड़ा दुष्कर कार्य किया है। इनके लिए यदि राम समुद्र–पर्यंत पृथ्वी को पलट दे तो मेरी समझ में उचित ही होगा, त्रेलोक्य का राज्य सीता की एक कला के बराबर भी नहीं है।
पत्नी व पति भारतीय संस्कृति में एक दूसरे के पूरक हैं। आदर्श पत्नी का चरित्र हमें जगदम्बा जानकी के चरित्र में तब तक दृष्टिगोचर होता है, जब श्री राम द्वारा वन में साथ न चलने की प्रेरणा करने पर अपना अंतिम निर्णय इन शब्दों में कह देती है –

प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माही। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाही।
जिय बिन देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरूष बिनु नारी।।

विषाद्ग्रस्त होकर भी पत्नी अथवा पति को अपने जीवन – साथी का ध्यान रखना भारतीय सांस्कृतिक आदर्श है। सीता को अशोकवाटिका में रखकर रावण ने साम, दाम, दण्ड, भेद आदि उपायों से पथ – विचलित करने का प्रयास किया, परन्तु सीता ने

अपने पारिवारिक आदर्श का परिचय देते हुए केवल श्री राम का ही ध्यान दिया गया यथाः

तृन धरि ओट कहती वैदेही, सुमिरि अवधपति परम सनेही।
सुनु दस मुख खद्योत प्रकासा, कबहुँ कि नलिनी करदू विकासा।।

वनगमन के अवसर पर सीता जब उर्मिला के प्रति संवेदना प्रकट करती है, उस समय माता सुमित्रा कि मार्मिक उद्धारों में सीता के चरित्र की झाँकी मिलती है
पति–परायणा, पतित भावना, भक्ति भावना, भक्ति भावना मृदु तुम हो,

स्नेहमयी, वात्सल्यमयी, श्रीकृराम – कामना मृदु तुम हो।।

सीता एक ओर भारतीय आदर्श पत्नी है, जिसमें पति – परायणता, त्याग, सेवा, शील और सौजन्य है, तो दुसरी ओर वे युग – युग जीवन की मर्यादा के अनुरूप श्रमसाध्य जीवन यापन में गौरव का अनुभव करने वाली नारी है, यथा

''औरों के हाथों यहाँ नही चलती हूँ।
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ।।''

कौशल्या कोमल मातृ हद्रया थी। भरत के कारण राम को 14 वर्ष का वनवास मिला, फिर भी उसका स्नेह भाव रामवत् ही है। वह भरत में ही राम का स्वरूप पा लेती है और माँ का आदर्श चरित्र उपस्थित करती है यथा

खीचा उनको, ले गोद, हद्रय लिपटाया,
बोली तुमको पा पुनः राम को पाया।।

माता कौशल्या ने अपने पुत्र को इस प्रकार संस्कारित किया कि विमाता कैकयी के कुभावों से भी राम विचलित नहीं हुए और सहर्ष वनवासी हुए। कौशल्या श्री राम को ऐसी ही शिक्षा देती हुए कहती है –

''जौं केवल पितु आयेसुताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अबध समाना।।''

कौशल्या मातृत्व की जीवन्त प्रतिमा है। दया, माया, ममता की मन्दाकिनी है। तप, त्याग एवं बलिदान की अकथ कथा है। वह राम और भरत में अंतर नहीं समझती। पति व राम से स्नेह रखती है, पर राम के वनगमन पर मौन रहकर अपने कर्तव्य का निर्वहन भी करती है। पति की मृत्यु के पश्चात् वह सती होने का प्रस्ताव भी रखती है। उसमे शील है, उदात्तता है, मातृत्व की व्यंजना है तो नारी सुलभ संवेदना भी हैं।
डॉ0 रामविनोदसिंह के शब्दों में, ''वाल्मीकि की कैकयी व्याध का क्रूर बाण है, 'मानस' की कैकयी सरस्वती का शापमय वाहन है, लेकिन 'सांकेत' की कैकयी ममतामयी माता है, जिसमें मानवीय मूल्यों के प्रति गहरा राग है।'' रामकाव्य परम्परा में कैकयी का चरित्र विविधता लिए हुआ है। वाल्मीकि रामायण में वर्णित है कि कैकयी के दशरथ विवाह इसी शर्त पर हुआ था कि राज्य कैकयी के पुत्र को दिया जायेगा। यह बात स्वयं राम द्वारा भरत से कही गई है यथाः–

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्धहन।
मातामहे समाश्रोषीद्राज्यशुल्कमनुतमम्।।

भरत का राज्य सिंहासन के प्रति उपेक्षा का भाव देखकर कैकयी का हृदय निराशा, ग्लानि, परित्ताप और पश्चाताप से वदग्ध हो जाता है। कैकयी अपना सर्वस्व लुटाकर और संसार की अवमानना सहकर भी मातृत्व की अभिलाषिनी है। तभी तो वह चित्रकुट की सभा में कहती है कि

थूंके मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों, चूकें?
छीने न मातृपद किंतु भरत का मुझसे,
रे राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे।।

कैकयी के इस कथन में कितना विषाद है, कितनी अथाह आत्मव्यथा है? वह अपने आप को धिक्कारती हुई कहती है किः–

युग – युग तक चलती रहे यह कठोर कहानी।
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।
निज जन्म – जन्म में जीव सुने यह मेरा,
धिक्कार! उसे था महास्वार्थ ने घेरा।

सुमित्रा – कौशल्या की अपेक्षा सुमित्रा प्रखर, प्रभावी एवं संघर्षमयी रमणी है। कैकयी के वचनों की पालना एवं श्री राम प्रभु के साथ जब लक्ष्मण अपनी माता से वन जाने की आज्ञा चाहते हैं तो वह कहती है कि जहाँ श्री राम जी का निवास हो वही अयोध्या है। जहां सूर्य का प्रकाश हो वही दिन है। यदि निश्चय ही सीता – राम बन को जाते हैं तो अयोध्या में तुम्हारा कुछ भी काम नहीं है। 'मानस' की उन पंक्तियाँ अवलोकनीय है –

अवध तहाँ जहँ राम निवासु। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू।
जौं पै सीय राम वन जाही। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं।''

सुमित्रा ने सदैव अपने पुत्र को विवेकपूर्ण कार्य करने को प्रेरित किया। राग, द्वेष, ईर्ष्या, मद से दूर रहने का आचरण सिखाया और मन – वचन – कर्म से अपने भाई की सेवा में लीन रहने का उपदेश दिया। मन्दोदरी – मन्दोदरी एक ऐसी रानी है, जिसने यथा समय नीति के अनुसार रावण को समझाने की चेष्टा की। वह राम की शूखीरता से परिचित थी अतः उसने कहाः

अति बल मधु कैटभ जैहि मारे। महाबीर दितिसुत संधारे।।
जेंहि बलि बाँधि सहसभुजमारा। सोई अवतरेउ हरन महि मारा।।

मन्दोदरी ने रावण को अनेक प्रकार से समझाने की कोशिश की, परन्तु रावण भी अपनी हठ पर अड़ा रहा। ऐसी स्थिति में उसने भी मान लिया की उसका पति काल के वश में है अतः उसे अभिमान हो गया है, वैसे मन्दोदरी राजनीति की विशरद् और राज – काज की सहायिका भी थी। उसने नगरवासियों के विचारों को जानने के

लिए दूतियों तक को नियुक्त कर रखा था। समय की पुतिकूलता को जानकर ही उसने रावण को समझाने का प्रयास किया था, पर रावण की हठ के कारण वह असफल रही। माण्डवी भरत की पत्नी है। वह पति – परायण एवं साध्वी नारी के रूप में चित्रित की गई है। उसके चरित्र के अनुराग – विराग, एवं आशा – निराशा का विचित्र द्वन्द्व है। वह संयोगिनी होकर भी वियोगिनी सा जीवन व्यतीत करती है माण्डवी भरत के सुख – दुख की सहभागिनी है। त्याग से ओत – प्रोत है। पति की व्यथित दशा देखकर वह कह उठती है कि –

नम्र स्वर में वह बोली 'नाथ' बटाऊँ कैसे दुःख में हाथ।
बतादो यदि हो कही उपाय, टपाटप गिरे अश्रु असहाय।।

उर्मिला – राम काव्य परम्परा में उर्मिला के चरित्र का सफल रेखांकन 'साकेत' और 'उर्मिला' में मिलता है, जिसमें उसके उपेक्षित व्यक्तित्व को उभारा हैं। 'साकेत' का नवम् सर्ग उर्मिला के विरह – विषाद की चरम निदर्शना है। वह अपने मन मन्दिर में प्रिय की प्रतिभा स्थापित कर सम्पूर्णा भोगों कर त्याग कर अपना जीवन योगमय बना लेती है, यथा

मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,
जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप।
आँखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,
हुआ योग से भी अधिक, उसका विषम वियोग।।

डॉ0 श्याम सुन्दर दास से कहा, 'काव्य' की यह चिर उपेक्षिता, 'साकेत' ही नही, हिन्दी महाकाव्यों की चरित्रभूमि में प्रथम बार जिस वेष में प्रकट होती है, वह वेष अश्रु स्वाभाविकता के निकट एवं देवी गुणों से मंडित होकर भी नारी सुलभ है।

अन्य नारी पात्र – रामकाव्य में अन्य नारी – पात्रों में मंथरा, शबरी, शूर्पणखा का नाम भी आता है। मंथरा जहाँ नीच दासी है, वही स्वाभिमता एवं कर्तव्य परायण भी है। 'साकेत' में भी 'मानस' की पुरानावृति है। वह कैकयी के मानस में मातृ प्रेम को उभारकर रघुकुल में संशय का विष उत्पन्न कर देती है। शूर्पणखा में नारी सुलभ भाव जहाँ पंचवटी में दिखाई देती है, वहीं उसकी काम – भावना भी प्रदर्शित होती है। 'शबरी' की भक्ति का दिग्दर्शन मानस मे उल्लेखनीय है, जहाँ वह श्री राम पर अपनी भावना को भक्तिमय बना देती है और उनका अतिथ्य सत्कार करती है। वहाँ प्रभु श्री राम ने भी प्रेम सहित उसका आतिथ्य स्वीकारा है।

अत्रिमुनि की धर्मसंगिनी 'अनुसूया' का चरित्र वर्णन भी 'मानस' में आया है। जब वह सीता को पतिव्रत धर्म की शिक्षा देती हुई कहती हैः

उत्तम के अस वस मन माही। सजनेहुँ आन पुरूष जग माही,
मध्यम परपति देखई कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।

इस प्रकार रामकाव्य परम्परा के लगभग सभी ग्रंथों में उपर्युक्त नारी – पात्रों का उल्लेख हुआ है। भिन्न – भिन्न भावभूमि के अनुसार उनके चरित्र की व्यंजना भी हुई है, परन्तु समग्र रूप से आदर्श की स्थापना ही अभिद्येय रहा है। वर्तमान समय में प्रासंगिकता – वस्तुतः रामकाव्य परम्परा में रचे गए साहित्य का उद्धेश्य जीवन मूल्यों का निर्माण करना, भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों की मूल्यवता बनाये रखना, सकारात्मक चितंन प्रदान करना व राष्ट्रीय – चरित्र का रेखांकन करना रहा है। ऐसी स्थिति में उसमें वर्णित नारी पात्र भी भारतीयता के आदर्श से ओत – प्रोत है, जिनसे न केवल चारित्रिक शिक्षा मिलती है, वरन हमारे जीवन को रसमय बनाने की क्षमता भी इन पात्रों में है।

रामकाव्य परम्परा भारत के सांस्कृतिक आदर्शों की कहानी है। उनमें वर्णित पात्र आदर्श की स्थापना करने वाले, समयानुकुल समायोजन करने वाले, प्राचीन मूल्यों का संवहन करने वाले, वीरत्व, त्याग, सहिष्णुता, कर्मठता, पातिव्रत को धारण करने वाले हैं, साथ ही वर्तमान युग की विसंगतियों का समाधान करते हुए नारी की महिमा को पुनर्स्थापित करने की क्षमता भी रखते हैं। समग्रतः रामकथा के नारी – पात्र वर्तमान में सर्वाधिक प्रासंगिक है, क्योंकि आधुनिकता का चकाचौंध में नारी की भव्य गरिमा को वे सुरक्षित रखवा सकते हैं, कहा है – ''यत्र नार्यस्तु, पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।'' इस भूमि पर नारी पूज्य रही है, रहेगी, परंतु उसे स्वयं भी अपनी ईश्वर प्रदत्त वैभव को सुरक्षित रखना होगा। रामकथा के ये नारी पात्र यही संदेश देते हैं।

संदर्भ

1. कबीर वाणी पीयुष, पृष्ठ. 117
2. रामचरित मानस, बालकाण्ड 7–32
3. साकेत, पृष्ठ संख्या 156
4. वही, पृष्ठ 94
5. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड 15, 53 और 16, 13
6. रामचरित मानस, अयोध्याकाण्ड 65/67
7. वही, सुन्दरकाण्ड 9/6–9
8. साकेत, सर्ग 8, पृष्ठ 223
9. साकेत – संत डॉ0 बलदेव प्रसाद मिश्र, तृतीय सर्ग, पृष्ठ 51
10. वाल्मीकि रामायण, भारतीय संस्कृति, डॉ0 देवराज पृष्ठ 31
11. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड 56/1–2
12. कवितावली, तुलसीदास पृष्ठ 2–3
13. साकेतः एक नत्य परिबोध, पृष्ठ 70
14. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड पृष्ठ 388
15. वही पृष्ठ 389
16. वही लंकाकाण्ड पृष्ठ 761 – 62
17. वही पृष्ठ 763
18. साकेत, संत डॉ0 मिश्र, पृथम सर्ग, पृष्ठ 26
19. वही, चतुर्थ सर्ग पृष्ठ 55
20. हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण पृष्ठ 115
21. साकेत सर्ग 9, पृष्ठ 269
22. वही पृष्ठ 474–75 उद्धत वही पृष्ठ 135
23. मानस की महिलाए, पृष्ठ 474–475
24. साकेत संत, ग्यारवा सर्ग, पृष्ठ 131
25. रामचरित मानस, अरव्यकाण्ड, पृष्ठ 650